ग्रामीण युवा आध्यात्मिक सशक्तिकरण

- बी.के.सुमन, अलीगंज, लखनऊ

हे धरती पुत्रों, सबके पालक, दाता, हे ग्राम्य देवता के वासी जरा याद करो तुम कहाँ पैदा हुए हो? जहाँ गांधी जी पैदा हुए, भगत सिंह पैदा हुए, रानी लक्ष्मीबाई पैदा हुई, ऐसे ग्राम देव तुम्हारा आलय है, जरा पहचान लो आपने आपको, तुम वहाँ के रहवासी हो, जहाँ शीतल हवाएं लोरियां सुनाती है, ठंडा जल, तन-मन-दिल-दिमाग को शीतलता के साथ राहत देता है। हरी सब्जियां, ताजेफल स्वास्थ्य का उपहार प्रदान करते है, गाय का ताजा मीठा दूध बुद्धि के विकास के साथ उमंग उत्साह की शारीरिक स्फूर्ति भी प्रदान करता है। पेड़ों की ठंडी छाया हर पथिक के लिए अनमोल औषधि का काम करती है। मेरे प्रिय युवा भाइयों उठो जागो और जगाओ अपने स्वमान को, तुम्हें वह मिला है जिसके लिए आज बड़े बड़े लोग भी तरसते है। तुम वह काम कर सकते हो, जो दुनिया का कोई भी पद वाला व्यक्ति वह काम नहीं कर सकता। तुम सबका जीवन चलाते हो, तुमसे दुनिया चलती है। तुम यह क्यों सोचते हो? कि मैं साधारण गाँव के साधारण किसान का बेटा थोड़ी-सी शिक्षा लेकर क्या कर सकता हूँ? भाइयों अब्दुल कलाम, अब्राहम लिंकन, भगत सिंह, लक्ष्मी बाई यह लोग भी साधारण ग्रामीण क्षेत्र से निकले और इनमें से कईयों ने सैकडों वर्षों के अंग्रेजी साम्राज्य को न सिर्फ हिला दिया बल्कि भारत को आजाद कर देशवासियों को मुक्त मगन उन्मुक्त धरा दी, इनमें से एक भारत का राष्ट्रपति बना एक अमेरिका का राष्ट्रपति बना, इसलिए अगर कुछ कर गुजरने का जजबा है तो लहरें भी साहिल पर पहुंचाने में मददगार साबित हो जाती है भाइयों उतार फेंको बुजदिली व दिलशिकस्ती की चादर, और दिखाओ अपनी जिन्दादिली का आगाज, तुम किसी से कम नहीं हो, दुनिया में किसी ने कितना बड़ा काम चाहे क्यों न किया हो पर उसके पास उतना ही दिमाग है जितना तुम्हारे पास, सिर्फ उसने अपने दिमाग को जगा लिया है, अपनी शक्तियों को पहचान कर उनको काम में लगा लिया और तुम सिर्फ सोच रहे हो। अपनी शक्तियों को या तो बन्द करके रख दिये हो या फिर तुम्हें अपनी क्षमता का अन्दाज ही नहीं। भाइयों तुम खुद उर्जा का प्रचण्ड रूप हो, हार्ड वर्क का पर्याय हो, तुम अदम्य साहस का प्रारूप हो, हिम्मत का दीप, उत्साह का धनी, परिवर्तन का आगाज, सृजनशीलता का प्रतिबिम्ब, निर्माणता का दर्पण, तुम्हें और किसी वैशाखी की जरूरत नहीं। तुम भारत का भविष्य हो, पहचानो अपने आपको, तुम अपनी ही नहीं सारे गाँव की तस्वीर बदल सकते हो। खोखले इरादे, बेकायदे के धन्धे, आधार हीन स्वप्न, उद्येश्य विहीन कार्य, विवेकहीन संग, निश्चित पतन का द्वार है जो आज नही तो कल गर्त में भेजेगा ही। साधन हीन गाँव का हवाला देकर मेरे भाई अपनी जिम्मेदारियों से मत भागो। एक लकड़हारा छोटी-सी कुल्हाड़ी से एक बड़े से बड़े पेड को धारासाई कर देता है। यह ताकत कुल्हाडी की नहीं वरन् उसकी है जिसने अपनी बुद्धि से अनवरत वार करके फतह हासिल की। एक छोटी-सी हथौड़ी बड़ी-सी बड़ी दीवार को मटियामेट कर देती है यह ताकत हथौड़ी की नहीं उस व्यक्ति की है जिसने बिना हिम्मत हारे लगातार चलाने की इच्छा शक्ति को कायम रख विजय प्राप्त की। मेरे ग्रामीण भाईयों क्या ये सब तुम्हारे पास नहीं है? तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि नौकरी करते ही कोई जादुई चिराग तुम्हारे हाथ लग जायेगा जिससे कई जीवन खुशहाली से प्रकाशित हो जायेंगे। तुम्हें और किसका इन्तजार है कि कोई मसीहा आयेगा और तुम्हारे लिए जन्नत का दरवाजा खोल देगा, मेरे युवा भाईयों जब सुभाषचन्द्र बोस ने विदेश में आई.सी.एस की परीक्षा पास की, तो वहां के एक बड़े पदासीन व्यक्ति ने उन्हें अच्छी नौकरी का ऑफर किया, तो उन्होंने साफ मना कर दिया और कहा कि मै अपने देश की सेवा करूंगा। तब उसने कहा कि तुम खाओगे क्या ? उन्होंने बड़े गर्व से कहा कि मेरा पेट तो दो आने मे भर जायेगा और दो आने तो मैं कमा ही लूंगा, पर सबसे पहली देश सेवा, मातृभूमि से अच्छा, ऊंचा कुछ भी नहीं। तुम गांव से पलायन क्यों करना चाहते हो? किसी ने पैदा किया तुमने खाया इससे कहीं अच्छा है तुम पैदा करो औरों को खिलाओ। यह प्रतिज्ञा कर लो कि मैं अपने समाज को अच्छा अन्न उगा कर दूंगा, समाज को बीमारी से मुक्त करूंगा, अन्धाधुन्ध रासायनिक खादों, जहरीली कृषि रक्षक दवाईयों का प्रयोग करके, अन्न को हम लगातार जहरीला बना रहे है। जिससे दिनोंदिन बीमारियाँ बढ़ती जा रही है। बढ़ती आबादी, चढ़ती महंगाई, भुखमरी, भ्रष्टाचार के बारे में मेरे भाई कुछ तो सोचो, उठाओ ये पान का बीड़ा और कह दो उन सब नौजवानों से जो निराशा की अन्धेरी सुरंग में भटक कर, शहरी चकाचौंध की आकर्षण में भागे जा रहे है। सुख वहाँ नहीं है जहाँ वे जा रहे है, सुख वहाँ है जिसे वे छोड़ने के तट पर खड़े है। जब भी कोई अपना भाग्य देखने के लिए कहता है तो वह व्यक्ति क्या देखता है? उसके हाथ। इसका मतलब? हमारा भाग्य हमारे हाथ

में हैं, हाथ कार्य का प्रतीक है अर्थात अपने कर्म से हम अपना भाग्य बनाते है वा बना सकते है। नौकर तो नौकर ही है मजदूरी चाहे छोटी हो, चाहे बड़ी, उसमें वह राजाई का सुख कहाँ? जो अपने कार्य में है। बड़े से बड़ी नौकरी करनेवाला नौकर ही कहलाता है, जबकि खेती करने वाला जमींदार, लैन्ड लार्ड कहलाता है फिर भी अगर तुम्हें लगता है कि मेरे पास कुछ नहीं है, तो हम तुम्हें छः इन्जेक्शन दे रहे है। अगर ये लगालो तो सारा संसार जीत जाओगे। सोचो महात्मा गांधी ने सिर्फ दो गुण सत्य और अहिंसा के बल से सारे संसार सहित दुश्मनों का भी दिल जीत लिया। भारत के राष्ट्र पिता बन गये मदर टेरेसा ने करुणा दया रूपी अचूक शस्त्रों से भारत सहित समस्त विश्व की हृदय सम्राट बन गयी। एक कुमारी सब की माँ बन गयी। वह छः इन्जेक्शन है :–

1. कड़ी मेहनत : इसका कोई विकल्प नहीं, मेहनत किसी की भी कभी भी निष्फल नहीं जाती। बशर्ते मेहनत विवेक युक्त की जाये। खेती सिर्फ मेहनत चाहती है वह खेत सोना उगलने के लिए आज भी तैयार है। हां विवेक के साथ श्रेष्ठ संवेदनायें भी प्रेषित की जाये तो खेती मां का रूप धारण कर सब कुछ न्योछावर करने के लिए आज भी तैयार है।

2. अटूट हिम्मत : हाँ, कई बार प्राकृतिक आपदायें खेती को भारी क्षति पहुंचाती हैं। परन्तु प्रकृति को समझ उस अनुसार फसल का चयन करना होगा। हिम्मत सफलता का दूसरा रूप है यह एक प्रकार से सफलता में सीमेन्ट का काम करती है। चींटी को देखो जो अपने से 50 गुणा अधिक भार उठाती है। सतत् प्रयासरत रहती कभी हिम्मत नही हारती, 50 बार असफल होने के बाद भी पुनः उसी उत्साह से प्रयास करती है और एक दिन सफल होती है। तुम तो सर्व श्रेष्ठ प्राणी हो।

3. सहयोग: सहयोग संगठन की डोर है। संगठन बड़े से बड़े कार्य को सहज ही संपन्न करने की क्षमता रखता है। गाँव के बहुत से कार्य ऐसे है जिनमें संगठन की आवश्यकता है। जिनकी जितनी क्षमता उतना सहयोग ईमानदारी से करें, निश्चित ही बड़े सहयोग के लिए तुम रास्ता तैयार कर रहे हो। कबूतरों की कहानी पता है ना सबने एक साथ सहयोग किया तो वे शिकारी का पूरा जाल ही लेकर उड़ गये।

4. सदाचार : अर्थात सच्चा एवं श्रेष्ठ आचरण। कहा गया है कि व्यक्ति के पहचान उसके बोल नहीं उसके कर्म कराते है। चरित्र वह खुशबू है जो हर किसी के जीवन को गंदगी के बीच में भी महका देती हैं। कुछ और सीखें या न सीखें पर सच्चाई-ईमानदारी जरूर सीख लें। आज भी लोग खुद चाहे कैसे भी हो, परन्तु हर एक अपना साथी सदाचारी ही चाहता है। किसी से चाहे थोड़ा ही संपर्क हो, पर झूठे बेईमान, भ्रष्टाचारी के साथ संबंध बुरे से बुरा व्यक्ति भी नहीं रखना चाहता। सत्य को परीक्षा तो देनी पड़ती है पर सत्य पराजित कभी नहीं होता। परिश्रम पराजय को भी विजय में बदल देगी।

5. सात्विकता : श्रेष्ठ मन ही श्रेष्ठ जीवन का आधार है श्रेष्ठ मन सात्विकता ही दे सकती है। कहा गया हैं 75% असर हमारे मन पर हमारे भोजन का होता है और जैसा अन्न वैसा मन वैसा फिर जीवन बनता चला जाता है। व्यसन कोई भी हो, यह वह कैंची है जो सभी संबंधों को काट कर रख देती है। व्यसन एक घुन है जो धीरे धीरे शरीर को खत्म कर के ही छोड़ता है। प्रकृति ने खाने के लिए हर मौसम में शरीर को जो चाहिए वह उपलब्ध कराती है। फिर भी न खाने योग्य चीज खाकर न सिर्फ स्वयं को मौत के हवाले करते है बल्कि समाज को भी एक संक्रामक रोग दे जाते है।

6. परमात्मा की याद : हर बात का जवाब, हर कर्म की सफलता, हर बीमारी का इलाज, सर्व गुणों का स्रोत, सर्व शक्तियों का सागर, हर खुशी का खजाना, गरीब नवाज, सबका मसीहा, सबका तारनहार वह परमात्मा हमारा पिता है हम उसकी सन्तान, उसकी हर चीज के हम वारिस है। वह हमारा है हमें खुशी देने के लिए सुखमय संसार बनाने आया है। जरा उसे याद करके तो देखो खुशी के साथ कारून का खजाना भी हाथ लग जायेगा।

हर मंजिल दस्तक देती है, पुरुषार्थ की उत्तम रेखा पर,
तकदीर स्वयं बदलती है, सतकर्मों की अभिलेखा पर।
नही शेर कभी ढूंढा करते, पदचिन्हों में अपने पथ को,
जांबांज नहीं मांगा करते, कभी किसी की रहमत को।

ओम्शान्ति